



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दैरेस ऑफ़

दिनांक ..3.1.2021 पृष्ठ संख्या..... 9कॉलम..... 2-8

15 जनवरी तक
हेरेगी जारी, एचएस
का चार नंबर गेट
भी खोला गया

हरियाणा न्यूज़ | हिसार

गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रुझान बोटनिकल गार्डन में हकूमि ने बेचे 50 हजार रुपये के विभिन्न पौधे

खास बातें

कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका

आम जन के

- निरुमुलदाउदी फूलों की विभिन्न किसी की विक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लोकन बाबूजुद इसके लिए जो रुझान कम नहीं हुआ है। प्रतिवर्ष कई लोग फूलों की किसी और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए वहाँ आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेन मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी को सभी विद्यार्थी का पालन करते हुए इन फूलों की विक्री की जा रही है। लोगों की प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों की प्रदर्शनी का बेस्टी से इतना बहुत रहता है, लेकिन इस बार परिस्थितियों अनुकूल न होने के कारण वह संभव नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस के पौधों की विक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी।

गार्डन में लगभग 600 से प्रजातियों के पाथ



एचएस का चार

नंबर गेट खुलने

से बढ़ रही संख्या

इस खुलासे के अनुसार लग सारे जो विश्वविद्यालय के गेट लाल घर तो तुच्छ सारे जात बजे से लात तादे पाप बजे तक लोग विद्या गया है, जिसके पारते अब इस पूर्णों की प्रदर्शनी व लकड़ी की प्रदर्शनी के पार लोग अप्रिक लकड़ी में आ रहे हैं। पोटी के साथ गार्डन में पूर्णों की प्रदर्शनी के लिए रखे गए हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दैनिक सौरा

दिनांक ३. १. २०२१ पृष्ठ संख्या ७ कॉलम ३-६

पौधों की बिक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक रहेगी जारी

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ सह शहरवासियों का रुझान

हिसार, २ जनवरी (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रुझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य ज्ञानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है। लोगों को प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों की प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार रहता है, लेकिन



बोटेनिकल गार्डन का अवलोकन करते हुए विधायक कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता व अन्य।

इस बार परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण यह संभव नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दौरा कर

हृषि का वार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संख्या

डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सांयं साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं।

विधायक की पत्नी के साथ बोटेनिकल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अध्यक्षा डॉ. राजबीर सिंह, स्नातकोत्तर अध्यक्षा डॉ. आशा कात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।

की 10 प्रजातियों के अलावा कैवटस व बोसाई की विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रुपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

पैन्ट जा० १२०२०

दिनांक .१. २०२० पृष्ठ संख्या..... ५ कॉलम..... ६ : ८

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रुझान

जागरण संवादाता, हिसार:
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के
नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में
अम जन के लिए गुलदाउदी फूलों
की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी
है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी
के चलते प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी
फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं
किया जा सका लेकिन बावजूद
इसके लोगों का रुझान कम नहीं
हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की
किस्मों और उनसे संबंधित अन्य
जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां
आ रहे हैं।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी
महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान
विभाग की अध्यक्षा डा. रेनू मुंजाल
ने बताया कि कोरोना महामारी की
सभी हिदयतों का पालन करते हुए
इन फूलों की बिक्री की जा रही है।
लोगों को प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों

15 जनवरी तक पौधों की होगी
विक्री

एचएयू का चार नंबर गेट
खुलने से बढ़ रही संख्या
नए साल से विश्वविद्यालय के गेट
नंबर चार का सुबह साढ़े 3 बजे
से सायं साढ़े पाव बजे तक खोल
दिया गया है, जिसके चलते अब इस
फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति
लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं।
विधायक की पली के साथ बोटेनिकल
गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं
मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी
डा. राजधीर सिंह, स्नातकोत्तर
अधिकारी डा. आशा व्यात्रा, डा.
अरविंद मलिक व अन्य मौजूद रहे।

की प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार
रहता है, लेकिन इस बार परिस्थितियां
अनुकूल न होने के कारण यह संभव

नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि
गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों
के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों
की बिक्री लोगों के रुझान को देखते
हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी।
उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों
की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के
लिए विधायक डॉ. कमल गुप्ता की
धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दौरा कर
यहां के मालियां द्वारा की गई मेहनत
की सराहना की।

बोटेनिकल गार्डन 10.5 एकड़ि
में फैला हुआ है जिसमें लगभग
600 विविध प्रकार के पौधों की
प्रजातियां शामिल हैं। उन्होंने बताया
कि 15 जनवरी तक की जाने वाली
बिक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों
के अलावा कैक्टस व बोंसाई की
विभिन्न प्रजातियां बिक्री के लिए
प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न
किस्मों की करीब 50 हजार रूपये से
अधिक की बिक्री हो चुकी है।



बोटेनिकल गार्डन का अवलोकन करती हुई विधायक कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डा. प्रतिमा गुप्ता व गार्डन में फूलों की प्रदर्शनी को निहारते वे
खरीदारी करते लोग विक्री के लिए रखे फूलों के पौधे। — जागरण



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....उजाला

दिनांक .३.।.२०२१....पृष्ठ संख्या.....।.....कॉलम.....२-४.....

प्रदर्शनी

हक्की में गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी में बढ़ी लोगों की दिलचस्पी

लोगों को रिज्ञा रहे गुलदाउदी के फूल

अमर उजाला व्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हक्की) के गेट नंबर-4 के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आमजन के लिए गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी में शहरवासी काफी रुचि ले रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की विक्री की जा रही है।

उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की विक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपली प्रेमिला ने भी यहां का दौरा कर प्रदर्शनी की



प्रदर्शनी के दौरान फूलों को देखते लोग।

गेट नंबर-4 भी खोला

डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 को सुबह साढ़े आठ बजे से सांच साढ़े पाँच बजे तक खोल दिया गया है। इसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। इस मौके पर बोटेनिकल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा कवात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।

सराहना की। डॉ. मुंजाल ने बताया कि बोटेनिकल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियां शामिल हैं। गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैटस व

बॉम्साई की विभिन्न प्रजातियां विक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रुपये से अधिक की विक्री हो चुकी है। बागवानी करने वाले लोगों को ये पुष्ट पसंद आ रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक मासिक.....

दिनांक .३.।.२०२० पृष्ठ संख्या.....५..... कॉलम.....।-३.....

नहीं लगी प्रदर्शनी पर गुलदाउदी की बिक्री जोरों पर



हिसार| चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में लोगों के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रुझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनु मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पाठ्यक्रम

दिनांक ..3.1.2021..पृष्ठ संख्या..... — कॉलम..... —

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीददारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रुझान

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 जनवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रुझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीददारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि कोरोना महामारी की



सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की बिक्री की जा रही है। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विधायक डॉ. कमल गुप्ता की धर्मपत्नी डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दौरा कर

की 10 प्रजातियों के अलावा कैटर्स व बोंसाई की विभिन्न प्रजातियों बिक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विभिन्न किस्मों की करीब 50 हजार रूपये से अधिक की बिक्री हो चुकी है। डॉ. रेनू मुंजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुबह साढ़े आठ बजे से सांयं साढ़े पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीददारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। विधायक की पत्नी के साथ बोटेनिकल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा कवात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाँच बजे.....

दिनांक 2.....1.....2021...पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

15 जनवरी तक रहेगी जारी, विश्वविद्यालय का चार नंबर गेट भी खोला गया

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रुझान



पाँच बजे व्यापा

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित ओटेनिकल मार्डन में आयोजन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न कलमों को बिक्री जारी है। जारीकर्ता द्वारा कोरोना महामारी के चलते प्रतिवेदी को भावि गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बाबत इनके लोगों का सज्जान काम नहीं हुआ है। प्रतिवेदन कई लोगों की किमां और उनमें संबंधित अन्य जानकारियों व खुरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वर्षभरी विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनु मंजूल ने बताया कि कोरोना महामारी की मध्ये हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों को बिक्री की जा रही है। लोगों को प्रतिवेदन के

फूलों की प्रदर्शनी का बेस्टमी से इतराज रहता है, लेकिन इस वार पर्सिस्टेलिया अनुकूल न होने के कारण यह संभव नहीं हो पाया। उन्होंने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किसी के पौधों को बिक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेंगे।

उन्होंने बताया कि गत दिनों इन फूलों की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विद्यार्थी डॉ. कमल पुष्प की धर्मपती डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दोग कर यार के मालियों द्वारा की। मेहनत की स्मरहन की।

विद्यायक की पहली ने कहा कि फूल मन का आर्मांट कर देते हैं और मनुष्य के मन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। डॉ. रेनु मंजूल के अनुसार नए माल में विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुख्ह साढ़े आठ बजे से साथी माद्दे पाँच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके चलते अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खुरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं। विद्यायक की पहली के साथ ओटेनिकल मार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अध्यक्षाता डॉ. राजवीर सिंह, स्नातकोत्तर अधिकारी डॉ. आशा विज्ञान, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य मौजूद थे।



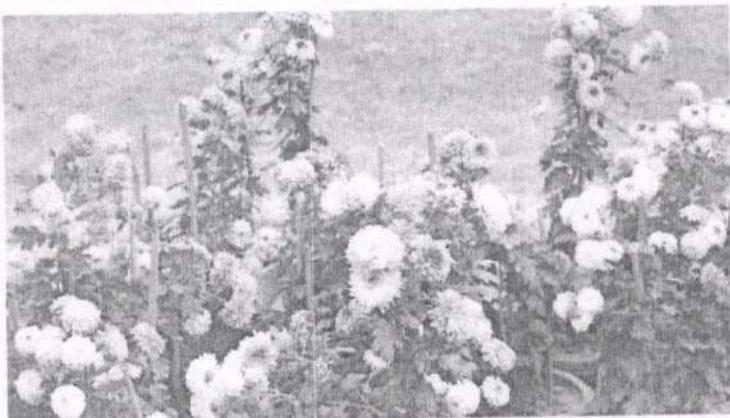
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सिंच ५८२

दिनांक .2....1....2021...पृष्ठ संख्या.....— कॉलम.....—

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रुझान 15 जनवरी तक रहेगी जारी, विश्वविद्यालय का चार नंबर गेट भी खोला गया

सिटी पर्सन न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विधिन किसी भी विक्री जारी है। दानांकिक इस बार कोरोना महामारी के जल्दी प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन यावज़ूद इसके नामा जा रुझान कर रही हुआ है। प्रतिदिन चार लोग फूलों की किसी भी उपस्थिति अन्य जानकारीयों व स्टोरियो के लिए यहाँ आ रहे हैं। योनिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के बनस्पति विज्ञान विभाग को अध्यक्षा डॉ. रनु मुंजाल ने बताया कि कोंसा महामारी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की विक्री की जा रही है।



उन्होंने कहाया कि गुलदाउदी की सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की विक्री की जा रही है।

विधिन किसी के घोषों की विक्री करने वालों के देखते हुए 15

मार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के घोषों की प्रजातियाँ शामिल हैं। 15 जनवरी तक की जाने वाली विक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैरेट्स व बोम्ब भी विधिन प्रजातियाँ विक्री के लिए प्रदर्शित की गई हैं। अब तक विधिन किसी की करीब 50 डिजार रुपये में अधिक की विक्री हो चुकी है। एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संख्या।

डॉ. रनु मुंजाल के अनुसार नए साल में विश्वविद्यालय के पाट नंबर चार को मूल्क मार्डन आठ बजे से साथ मार्डन पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके बाद अब इस फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक संख्या में आ रहे हैं।



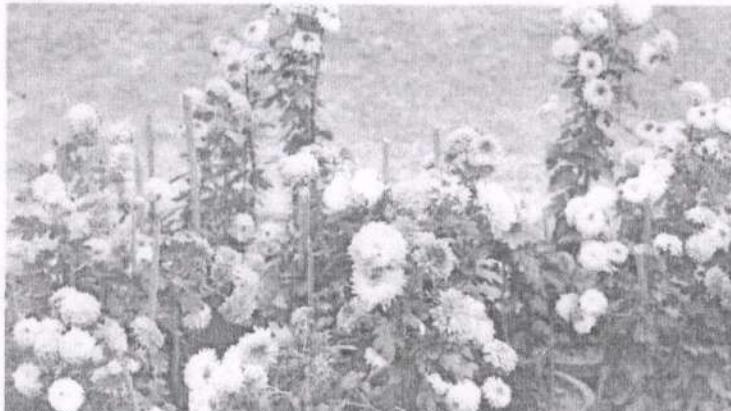
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दिनांक २१.१.२०२१ पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

एचएयू में गुलदाउदी फूलों की खरीदारी के लिए बढ़ रहा शहरवासियों का रुझान

15 जनवरी तक रहेगी जारी, विश्वविद्यालय का चार नंबर गेट भी खोला गया

मिट्टी पत्थर न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक, विश्व बोटेनिकल गार्डन में आगे जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विपणन किसी की विक्री जारी है। दालालक, इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवार्षीय की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका तोकिन आव बुद इसके लिए जो सज्जन कम नहीं हुआ है। प्रतिवार्ष बड़े नींग फूलों की किसी और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहाँ आ रहे हैं। भौतिक विद्यालय एवं मानविकी की प्रशासनिक विभाग के बनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रमेशु युजाल ने कहाया कि कारोना फ्लामरों की सभी लियायती वार पालन करते हुए इन फूलों की विक्री की जा रही है।



उद्योग विभाग की गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अनावा

विभिन्न किसी के पौधों की विक्री लोगों के रुझान को देखते हुए। 15

जनवरी तक जारी रहेगी। डॉ. रमेशु मुजाल ने कहाया कि बोटेनिकल

गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पौधों की प्रजातियाँ जारी हैं। 15 जनवरी तक को जान लाने विक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों के अलावा कैटटर्स व बोसाड की विपणन प्रजातियाँ विक्री के लिए प्रतिवार्षीय की गई हैं। अब तक विभिन्न किसी की करोंब 50 हजार रुपये से अधिक की विक्री हो चुकी है।

एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संख्या डॉ. रमेशु मुजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को सुव्ह यारे आठ बजे से साय माहे पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके बहाते अब उम्र फूलों की प्रदर्शनी व खरीदारी के प्रति लोग अधिक मधुमा में आ रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सभृत वैरेग्या

दिनांक २१।।। २०२१।।। पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

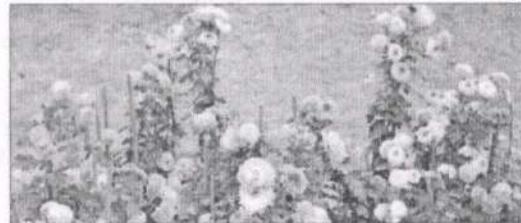
गुलदाउदी फूलों की खुशबू से महका हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

15 जनवरी तक रहेगी
जारी, विश्वविद्यालय
का चार नंबर गेट भी
खोला गया

मप्रस्त हरियाणा न्यूज़

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बोटेनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों को विभिन्न किम्बों की विक्री जारी है।

हालांकि इस चार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बाबूबद इमके लोगों का अन्यान कम नहीं हुआ है। प्रतिवर्ष कई लोगों को प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बाबूबद इमके लोगों का अन्यान कम नहीं हुआ है।



यहाँ आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी भागीदारी विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेणू मुजाल ने बताया कि कोरोना महामारी को सभी हिदायतों का पालन करते हुए इन फूलों की विक्री की जा रही है।

लोगों को प्रतिवर्ष इस मौसम के फूलों की प्रदर्शनी का बेसब्री से इंतजार रहता है, लेकिन इस बारे पर्याप्तियां अनुकूल न होने के कारण यह संभव नहीं हो चाया।

उन्होंने बताया कि गुलदाउदी को सांभग्य 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस के पीढ़ी की विक्री लोगों के रुक्तान को देखते हुए, 15 जनवरी तक जारी रहेगी।

उन्होंने बताया कि यह दिनों इन फूलों की डॉ. डॉ. रेणू मुजाल ने बताया कि बोटेनिकल गार्डन 10.5 एकड़ में फैला हुआ है जिसमें लगभग 600 विविध प्रकार के पीढ़ी की प्रजातियां शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी तक को जाने वाली

एचएयू का चार नंबर गेट खुलने से बढ़ रही है संछ्या ८०, रेणू मुजाल के अनुसार नए साल से विश्वविद्यालय के गेट नंबर चार को मूच्छ साले आठ बजे से साथ साथ पांच बजे तक खोल दिया गया है, जिसके बाते अब इस फूलों की प्रजाती व खट्टीयों के प्रति सोग अधिक संख्या में जा रहे हैं। विभायक की पांच के साथ बोटेनिकल गार्डन में मौलिक विज्ञान एवं मानविकी भागीदारी विश्वविद्यालय के अधिकारी डॉ. गजबीर मिंह, साक्षीतर अधिकारी डॉ. आशा कात्रा, डॉ. अरविंद मलिक व अन्य पौजूद थे।

प्रदर्शन का डॉ.

प्रतिमा गुप्ता ने किया अवलोकन

प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए विभायक डॉ. कमल गुप्ता ने की धर्मपत्री डॉ. प्रतिमा गुप्ता ने दौड़ कर यहाँ के मौलिकी द्वारा की गई मेहनत को मराहना को। विभायक को पहले ने कहा कि फूल भन का आनंदित कर देते हैं और मनुष्य के मन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। विक्री में गुलदाउदी की 10 प्रजातियों की है। अब तक विभिन्न किम्बों की कीरी अलाया कैटर्स न बोंसाई भी विभिन्न 50 हजार रुपये में अधिक की विक्री हो प्रजातियों विक्री के लिए प्रदर्शित को गई चुकी है।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....नोटिस एसोसिएशन
दिनांक .2.....1.....2021.....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—

हृकृषि में गुलदाउदी की बिक्री 15 तक

हिसार/02 जनवरी/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार नंबर गेट के नजदीक स्थित बॉटैनिकल गार्डन में आम जन के लिए गुलदाउदी फूलों की विभिन्न किस्मों की बिक्री जारी है। हालांकि इस बार कोरोना महामारी के चलते प्रतिवर्ष की भाँति गुलदाउदी फूलों की प्रदर्शनी का आयोजन नहीं किया जा सका लेकिन बावजूद इसके लोगों का रुझान कम नहीं हुआ है। प्रतिदिन कई लोग फूलों की किस्मों और उनसे संबंधित अन्य जानकारियों व खरीदारी के लिए यहां आ रहे हैं। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. रेनू मुंजाल ने बताया कि गुलदाउदी की लगभग 10 प्रजातियों के अलावा विभिन्न किस्म के पौधों की बिक्री लोगों के रुझान को देखते हुए 15 जनवरी तक जारी रहेगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

भैनीकुमारगढ़

दिनांक : ३. १. २०२१ पृष्ठ संख्या : ५ कॉलम : १८

जागरूकता

विज्ञानियों ने सिफारिश किए गए फूलदानशकों के प्रयोग की सलाह दी, सरसों के खेत का दौरा कर दी जानकारी

सरसों की बीमारियों की रोकथाम कर अधिक पैदावर लें किसान

जागरण संवाददाता, हिसार: सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारमीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं।

किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के विज्ञानी डा. राम अवतार बताते हैं कि यह समय बीमारियों वाला है। सरसों में खासकर बीमारियों की संभावना है।

दोपहर तीन बजे के बाद करें
छिड़काव: विज्ञानियों के अनुसार



सरसों के खेत का मुआयना करते वैज्ञानिक। ● विज्ञप्ति

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

सहायक विज्ञानियों डा. राकेश पूनिया के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रुठा बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोजेब को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें।

अग्रीती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट

सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्ड

इस बीमारी में पत्तियों की निचली स्तर पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

बीमारियों की रोकथाम के लिए करें ताकि मधुमक्खियों को कोई किए जाने वाले स्प्रे के छिड़काव नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है।

सफेद रुठा

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छाटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बढ़ाग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टेंग हड़ कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पठेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फूलद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने वा फलियों बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... पंजाब के सरो

दिनांक .३.।.२०२१ पृष्ठ संख्या..... ५ कॉलम..... १८

‘कृषि वैज्ञानिकों ने खेतों में किया फसल का निरीक्षण’

हिसार, 2 जनवरी
(ब्यूरो) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डा. राम अवतार व उनकी टीम ने सरसों फसल पर आने वाली बीमारियों को ध्यान में रखते हुए खेतों का दौरा किया। वैज्ञानिकों के अनुसार अगती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सरसों के खेत का मुआयना करते वैज्ञानिक।



समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें, ताकि मधुमक्खियों को कोई नुस्खान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डा. राकेश पूनिया (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की फसल में कई

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारियां व उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : सरसों की फसल की मुख्य बीमारी है। इसमें पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इनका रंग काला हो जाता है और पते पर गोल छल्ले दिखाई देने लगते हैं।

फुलिया या डाऊनी मिल्ड्स : इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण-सा बन जाता है।

सफेद रतुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रोम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेंद्रे आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैंड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तना गलन : यह रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं, जिन पर बाद में सफेद फर्नूद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने वाले फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है, जिससे तने ढूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें रोकथाम

सहायक वैज्ञानिक डा. राकेश पूनिया (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोजेव (डाइथेन या इंडोफिल एम. 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार छिड़काव करें।

इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है, वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दौरे क्रीम, धैनु भरक

दिनांक ३.१.२०२१ पृष्ठ संख्या..... १, २ कॉलम..... ५, ६, ८

सिफारिश किए गए फफुंदनाशकों के प्रयोग की सलाह दी

सरसों में बीमारियों की समय से पहचान करें

■ तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने किसानों को दी सलाह

हाइभूमि न्यूज ► हिसार

सरसों खेतों में उगाइ जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राथा, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं।

किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।



हिसार। सरसों के खेत का मुआयना करते वैज्ञानिक।

फोटो: हाइभूमि

सकते हैं। यह सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ.

राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बीमारियों को ध्यान

में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरात यह सलाह जारी की है।

वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है।

तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनिया (पादप

रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफुंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके। सरसों में मुख्य रूप से अल्टर्नेरिया ब्लाइट, फुलिया या डाउनी मिल्ड, सफेद रुआ, तनागलन बीमारी का प्रकोप हो सकता है।

एचएयू के वैज्ञानिकों ने किया सरसों के खेतों का दौरा



हिसार। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... नं.भा. द्यौ.

दिनांक २१। २०२१ पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

सरसों वर्गीय फसलों को समय पर पहचान कर रोगों से बचाया जा सकता है: हकूमि

हिसार/02 जनवरी/रिपोर्टर

सरसों रखी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात ज़िलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उसकी आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के

कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बिमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बिमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनिया (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की फसल में कई बिमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बिमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

समस्त धैरपण

दिनांक ..2.....।.....20.21.....पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

कृषि वैज्ञानिक ने दी सरसों में बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम करने की सलाह

वैज्ञानिकों ने सरसों के खेत का दौरा कर दी जानकारी

समस्त हरियाणा न्यूज हिसार। सरसों खेतों में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिमार, सिरसा, भिवानी व मेवात ज़िलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है।

उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बिमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दीरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बिमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से

अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। किसान फसल की बिमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव संदेश सायंकाल को 3 बजे के बाद करें। तिलहन विभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनियां (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की फसल में कई बिमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है।



ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : सरसों की फसल की यह मुख्य बिमारी है। इस बिमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू : इस बिमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्चा सा बन जाता है।

सफेद रुतुआ : सरसों की इस बिमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेंदग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैग हैंड कहते हैं। यह बिमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन : तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फूँद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने दृट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बिमारियों की रोकथाम

सहायक वैज्ञानिक डॉ. राकेश पूनियां (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रुतुआ बिमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार छिड़ देव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बोन्डजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां जिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बोन्डजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
—पाँच बजे, १५ मई २०२१—
दिनांक २१.१.२०२१ पृष्ठ संख्या.....
—कॉलम.....

वैज्ञानिकों ने सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों के प्रयोग की सलाह दी, सरसों के खेत का दौरा कर दी जानकारी सरसों की बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं किसान : कृषि वैज्ञानिक

पाप बो लूँ

हिसार। सरसों स्थी में आई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों बीमारियों के तहत तीरिया, साग, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती है। हरियाणा में सरसों मूल्य रुप से खेती, महेन्द्रगढ़, तिथार, सिरसा, खिंडवाला जिलों में औई जाती है। किसान सरसों उत्पादक कर कर्म खुरां में अधिक लागत करता है। किसान सरसों की बीमारियों की समय रुपों अच्छी तरह पहचान कर उत्तम आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह जीमी दरण द्वारा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मानविकासियों में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर जाने वाली विभारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विभाविष्यत का अनुभापन लेव का दीरी करने के उपाय वह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुभापन अनेकों व पहली सरसों की फसल में वही प्रकार की विभारियों का प्रकार हो सकता है, किसान किसान समय से पहचान कर सकते हैं। उन्होंने विभाविष्यत का प्रकार हो सकता है। उन्होंने बताया कि किसान फसल को सजाते हैं। उन्होंने बताया कि विभाविष्यत को योग्य करने के लिए किस जाने वाले विडाकाव फटेव सापाकाल को ३ बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को काढ़ नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है। तिलहन विभाग के सरसों की फसल करने के लिए इन विभारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मूल्य विभारियों को पहचान कर उनकी रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार



सरसों पर फसल में कई विभारियों का प्रयोग होना का खतरा रहता है, जिनको बचाने इनकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपाय तिलहन करने के लिए इन विभारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मूल्य विभारियों को पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विभाविष्यत प्राप्त

सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग कर ताकि विभारी का महत्व समय पर बर्बाद नहीं हो सके।

ये हैं सरसों की मूल्य विभारी और उनके लक्षण

अट्टरोनिराय ब्लाउट

सरसों की फसल को यह मूल्य विभारी है। इस विभारी में पौधे के पत्तों पर वर्णियों पर गोल गोल बड़े बन जाते हैं। बड़े दिन बाद इन धब्बों का सा काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छड़े दिखाए दें लात होती है।

पुलिया या डाकड़ी ब्लाउट

इस विभारी में पत्तियों को निचली सरस पर भूरे रंग के बड़े बन जाते हैं और धब्बों का कारंसर भाग गीला पहुंचा हो जाता है व इन धब्बों पर चुप्पी भी बन जाती है।

सफेद तनाम

सरसों की इस बीमारी में वर्णियों पर गोल और जीमी रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इसमें जीने व पूल बेदगा आकार के होते हैं। जीने व पूल बेदगा अकार के होते हैं। यह विभारी हर साल लात हो वह विजाहे के 45 से 50 दिन तक 65 से 70 दिन के बाद कार्बोनाइज़ेम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार डिग्नोज़ेम करें।

के भूरे भूरे गले खल्हे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरफ बन जाती है। ये सरण पत्तियों व टाईनियों पर भी नज़र आ सकते हैं तथा फूल जाने वाले पर इन सें वर्षा बातें हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

सहायता देतीनहां और गोला पुनिया (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुभाप सरसों को अट्टरोनिराय ब्लाउट, पुलिया और सफेद गुआ विभारी के लक्षण नज़र आते ही 600 ग्राम मैकोबेल (झूँझेन या डोक्फिल एम 45) को 300 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ जी दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार डिग्नोज़ेम करें।

इसी प्रकार तनाम बनाने एवं किए 2 बार कार्बोनाइज़ेम (बीमारी) प्रति किलोग्राम बीज के लियाव से बीज उत्पाद करें। जिन बीजों में तन बनने रोग का प्रकोप हर साल लात हो वह विजाहे के 45 से 50 दिन तक 65 से 70 दिन के बाद कार्बोनाइज़ेम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार डिग्नोज़ेम करें।

सरसों की बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं किसान : कृषि वैज्ञानिक

सिटी पॉल्यून्यूज़, हिसार। सरसों स्थी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों बीमारियों के तहत तीरिया, साग, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती है। हरियाणा में सरसों मूल्य रुप से खेती, महेन्द्रगढ़, तिथार, सिरसा, खिंडवाला जिलों में व्हैंड जाती है। किसान सरसों की विभारी की समय रुपों अच्छी तरह पहचान कर उनका आगामी में रोकथाम कर सकते हैं। यह

सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी टीम ने दी है।

वैज्ञानिकों के अनुभाप अग्रेती व पहली सरसों की फसल में कई प्रकार की विभारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की विभारियों की समय रुपों के लिए किसान विभाविष्यत के लिए किसान विभारियों की समय से पहचान कर सकते हैं।

छिड़काव सैटेव सार्काल को ३ बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उत्तर बहाने में सहायक होती है। तिलहन विभाग के महाविद्यक वैज्ञानिक डॉ. रामेश पुनिया (पादप रोग विशेषज्ञ) के अनुभाप सरसों की अट्टरोनिराय ब्लाउट, पुलिया और सफेद गुआ विभारी के लक्षण नज़र आते ही 600 ग्राम मैकोबेल (झूँझेन या डोक्फिल एम 45) को 300 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ जी दर से 15 दिन के अंतर पर 3 से 4 बार डिग्नोज़ेम करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....रुजाज़ समाज़

दिनांक .३.।.२०२१....पृष्ठ संख्या.....— कॉलम.....—

'रोकथाम से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं किसान'



सरसों के खेत का मुआयना करते वैज्ञानिक।

आज समाज नेटवर्क

हिसार। सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है।

किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम

अवतार व उनकी टीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बीमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दैश करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... नं०/१०२

दिनांक २०.१.२०२१ पृष्ठ संख्या कॉलम

सरसों वर्गीय फसलों को समय पर पहचान कर रोगों से बचाया जा सकता है: हकूमि

हिसार/02 जनवरी/रिपोर्टर

सरसों खींची में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत नोरिया, गया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बिमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उसकी आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। यह सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के

कृषि महाविद्यालय में तिलहन विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार व उनकी दीम ने दी है। उन्होंने यह सलाह इस समय फसल पर आने वाली बिमारियों को ध्यान में रखते हुए दी है। वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान क्षेत्र का दैरा करने के उपरांत यह सलाह जारी की है। वैज्ञानिकों के अनुसार अग्री व पछेती सरसों की फसल में कई बिमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बिमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

ऐनीज़ जारी

दिनांक .३.।. २०२१. पृष्ठ संख्या.....३.....कॉलम.....५.....

एचएयू के दो वैज्ञानी
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम
अवार्ड-2020 से सम्मानित



डॉ. जतेश। ● स्वर्य डा. रश्मि। ● स्वर्य

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कॉफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लॉट साईंसेज में यह सम्मान दिया गया।

उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रायिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कॉफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर, कुलसाचिव डॉ. बीआर कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब कैसरी, झज्जर उत्तरा.....

दिनांक .३.।. २०२१...पृष्ठ संख्या.....२.....कॉलम.....३-४.....

‘एच.ए.यू. के २ वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-२०२० से सम्मानित’

हिसार, २ जनवरी
(ब्यूरो): चौधरी चरण
सिंह हरियाणा कृषि
विश्वविद्यालय के २
वैज्ञानिकों को डॉ.
ए.पी.जे. अब्दुल
कलाम अवार्ड-२०२०
से सम्मानित किया
गया है। मौलिक

विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के
अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि
नई दिल्ली में आयोजित ११वीं इंटरनैशनल



डॉ. रिश्म त्यागी व डॉ.
जतेश काठपालिया।

कांफ्रेंस ऑन एप्रीकल्चर,
हार्टिकल्चर एंड प्लांट
साइंसेज में यह सम्मान
दिया गया।

उन्होंने बताया कि
समाज शास्त्र विभाग की
सह-प्राच्यापक डॉ. रिश्म
त्यागी व डॉ. जतेश
काठपालिया को यह सम्मान

दि सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एप्रीकल्चर की
ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-
पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है।

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवॉर्ड से सम्मानित

हिसार (ब्यूरो)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
(हक्की) की दो वैज्ञानिकों को डॉ.
एपीजे. अब्दुल कलाम अवॉर्ड-
२०२० से सम्मानित किया गया है।

यह जानकारी देते हुए मौलिक
विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय
के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने
बताया कि नई दिल्ली में आयोजित ११वीं इंटरनैशनल कांफ्रेंस ऑन
एप्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसेज में यह सम्मान दिया
गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राच्यापक
डॉ. रिश्म त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी
सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एप्रीकल्चर की ओर से उनके द्वारा
कांफ्रेंस में अपने शोधपत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है।



डॉ. रिश्म त्यागी, मं. जतेश काठपालिया



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... मैन कूदरा, मैन कूमार

दिनांक ३:१८:२२। पृष्ठ संख्या ७ कॉलम ७-८

हकूमि के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड से सम्मानित

हिसार, (सुरेन्द्र सोढ़ी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड- 2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ.

राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं



डॉ. जतेश काठपालिया एवं सह-प्राध्यापक

डॉ. रिश्म त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रायिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कॉर्फेस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड से सम्मानित

भारकर न्यूज, हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड- 2020 से सम्मानित किया गया है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कॉर्फेस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक

डॉ. रिश्म त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रायिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कॉर्फेस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सिटी पल्स.....

दिनांक २१.२.२०२१. पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह

जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रायिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, कुलसचिव डॉ. वी. आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।



डॉ. रश्मि त्यागी



डॉ. जतेश
काठपालिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....प्रभुदेव.....

दिनांक ..३.१.२०२०.....पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित



पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 3 जनवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन

एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पांच बजे.....

दिनांक।.....२०२१.....पृष्ठ संख्या.....कॉलम.....

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया।

उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..

ਸਾਮਰਿ ਦੀ ਰਾਗ

दिनांक २१.१.२०२१ पृष्ठ संख्या — कॉलम —

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल
कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित



डॉ. रश्मि
त्यागी



डॉ. जतेश
काठपालिया

समस्त हरियाणा न्यूज़
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मैलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कॉफेस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लॉट साईंसिज़ में यह सम्मान दिया गया। उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रायिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा काफ़ीमें अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

एचएयू के दो वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल
कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल काफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसिज में यह सम्मान दिया गया।

उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह-प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रापिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कांफ्रेंस में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... नं. ५८ छौट

दिनांक .2.1.2021....पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

डॉ. रश्मि व डॉ. जतेश को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड

हिसार/02 जनवरी/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दो वैज्ञानिकों को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड-2020 से सम्मानित किया गया है। यह जानकारी देते हुए मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह ने बताया कि उन्हें नई दिल्ली में आयोजित 11वीं इंटरनेशनल कॉफ्रेंस ऑन एग्रीकल्चर, हार्टिकल्चर एंड प्लांट साइंसेज में यह सम्मान दिया गया।



उन्होंने बताया कि समाज शास्त्र विभाग की सह

प्राध्यापक डॉ. रश्मि त्यागी व डॉ. जतेश काठपालिया को यह सम्मान दी सोसायटी ऑफ ट्रॉपिकल एग्रीकल्चर की ओर से इनके द्वारा कॉफ्रेंस में अपने शोध पत्र प्रस्तुत करने पर दिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह, कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह व समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. विनोद कुमारी ने दोनों वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।